IOSR Journal of Humanities and Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 27, Issue 4, Series 1 (April. 2022) 69-73
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

खिलजी वंश एवं तुगलक वंश के काल में हरियाणा पर बाह्य आक्रमण

डॉ. शत्रुजीत सिंह
इतिहास विभाग
राजकीय कन्या महाविद्यालय रानियां

1290 ई. में दिल्ली सल्तनत के दास वंश का अंत करके खिलजी सरदारों का नेता जलालुद्दीन फिरोज सिंहासन पर बैठा। भारतीय इतिहास में गुलाम वंश के स्थान पर खिलजी वंश की स्थापना 'खिलजी क्रान्ति' के नाम से जानी जाती है।

दिल्ली के तुर्कों एवं अमीरों को फिरोज से घृणा थी, इसलिए जलालुद्दीन फिरोज ने 'किलोखरी' को अपनी राजधानी बनाया। जलालुद्दीन के शासनकाल में 1292 ई. में मंगोल नेता अब्दुल्ला ने डेढ़ लाख सैनिकों सहित भारत पर आक्रमण किया। वह सुनाम तक बढ़ गया। जलालुद्दीन की सेना ने मंगोलों से भीषण युद्ध करके उन्हें पराजित कर दिया। इसके पश्चात् सन्धि के परिणामस्वरूप मंगोल नेता अब्दुला वापस चला गया, परंतु चंगेज खां का पुत्र उलूग खां अपने सैनिकों एवं सरदारों सहित भारत में रहने लगा।" जलालुद्दीन का भतीजा अलाऊद्दीन था। जलालुद्दीन के अधीन रहकर अनेक अभियानों में सेना का नेतृत्व किया । 1296 ई. में वह देवगिरी अभियान से वापिस आया। इसके पश्चात् वह अपने चाचा जलालुद्दीन से मिला, तब अलाऊद्दीन के रक्षकों ने जलालुद्दीन की गर्दन काट दी। बरनी के अनुसार' "अभी सुल्तान के कटे हुए सिर से रक्त बह रहा था कि षड्यन्त्रकारियों ने राजसी मुकुट लाकर अलाउद्दीन से सिर पर रख दिया। अलाउद्दीन का जन्म 1266 ई. में हुआ था। उसके पिता की मृत्यु हो जाने के कारण उसका पालन-पोषण उसके चाचा जलाउद्दीन फिरोज ने किया। 1296 ई. में वह अपने चाचा की हत्या करके सिंहासन पर बैठा। सिंहासन पर बैठते ही उसने जनता से कठोरतापूर्ण व्यवहार किया। बरनी लिखता है कि "उसने अपने कर्मचारियों को ऐसे कानून बनाने के आदेश दिए. जिसके द्वारा लोगों की सुख-समृद्धि छीन कर उन्हें नियन्त्रित किया जा सके।"

अलाउद्दीन के शासनकाल में 1296-97 ई. में कादर खान के नेतृत्व में मंगोलों ने भारत पर आक्रमण किया। उन्होंने सिन्धु नदी को पार करके लाहौर पर अधिकार कर लिया। अलाउद्दीन के सेनापति जफर खाँ एवं उलूग खाँ ने उन्हें जालंधर के दोआब में पराजित कर दिया।"

1299 ई. में मंगोलों ने फिर से भारत की उत्तरी-पश्चिमी सीमा में प्रवेश किया। इस बार मंगोलों का नेतृत्व कुतलुग ख्वाजा कर रहा था। मंगोल सिन्धु नदी को पार करके पंजाब में सैनिक टुकड़ियों से लड़े बिना ही हरियाणा से होकर दिल्ली की ओर प्रस्थान करने लगे। इस बार मंगोलों का लक्ष्य दिल्ली पर अधिकार करना था। इससे परेशान होकर अलाउद्दीन ने दिल्ली की रक्षा के लिए सभी गवर्नरों को सन्देश भेजा। बरनी के अनुसार "दिल्ली में व्याकुलता उत्पन्न हो गई। डरे लोग पडोसी गांवों से आकर शहर में एकत्रित होने लगे और रक्षा के लिए समस्या खड़ी हो गई।" अलाउद्दीन ने अपनी सेना सहित दिल्ली से छह मील दूर कीली में अपना पड़ाव डाला। अलाउद्दीन ने अपनी सेना में व्यूह रचना की। अलादद्दीन की सेना एवं मंगोलों में भयंकर युद्ध हुआ। जफर खाँ के आक्रमण से भयभीत होकर मंगोल भागने के लिए मजबूर हो गए। जफर खाँ ने भागते हुए मंगोल सेना का पीछा भी किया, परंतु मंगोल सेना ने जफर खाँ को मार डाला। वापस लौटते समय

मंगोल नेता कुतलुग ख्वाजा बीमार हो गया, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। इस प्रकार अलाउद्दीन विजयी होकर दिल्ली लौट आया।"

भारत में हुई पराजयों के बाद मंगोलों ने कुछ वर्षों तक भारत पर आक्रमण नहीं किया। इस अवसर का लाभ उठाकर अलाउद्दीन ने भारत में अविजित क्षेत्रों को जीता। 1303 ई. में मंगोलों ने भारत पर एक बार फिर आक्रमण कर दिया। उस समय अलाउद्दीन चितौड़ में था। इस बार मंगोलों का नेतृत्व तरगी बेग कर रहा था। मंगोलों ने उत्तर भारत के अनेक गांव व शहरों को लूटा तथा अचानक वापिस लौट गए। इसका कारण यह हो सकता है कि तरगी बेग डर गया होगा कि उसकी सेना फिर से पराजित न हो जाए।

इसके पश्चात् मंगोलों ने 1305 ई. में अली बेग एवं तरगी बेग के नेतृत्व में फिर आक्रमण कर दिया। मंगोलों ने पहले मुल्तान को लूटा। इसके बाद पंजाब को पार करते हुए मंगोल शिवालिक की तलहटी में पहुंच गए। मंगोलों का यह आक्रमण हरियाणा में हुआ। तरगी बेग को अलाउद्दीन के एक सरदार ने सतलुज नदी के किनारे मार डाला। इस आक्रमण से दिल्ली को बचाने के लिए स्वयं अलाउद्दीन ने दिल्ली की सुरक्षा का भार लिया। अलाउद्दीन ने मलिक काफूर को मंगोलों के विरूद्ध सेना सहित भेजा। मलिक काफूर ने अमरोहा के निकट मंगोलों पर आक्रमण किया तथा उन्हें पराजित कर दिया। के.सी. यादव के अनुसार "1305 ई. में मंगोलों ने हरियाणा पर आक्रमण कर दिया था। अलाउद्दीन के एक चहेते हिन्दु जनरल नानक ने उन्हें हाँसी एवं सिरसा के बीच रोका। नानक की सेना बड़ी बहादुरी से लड़ी और देखते ही देखते मंगोलों के पैर उखाड़ दिए। नानक ने अलीबेग और तरताक नामक मंगोल सरदारों को कैद कर लिया और तीस हजार घोड़े छिनकर अलाउद्दीन को भेंट किए।" ऐसा संभव है कि जब मंगोलों ने हरियाणा पर आक्रमण किया तो वहां के गवर्नर ने उन्हें पराजित कर दिया था।

इसके पश्चात् मंगोलों ने कई वर्षों तक आक्रमण नहीं किए जो आक्रमण मंगोलों ने किए थे, उन आक्रमणों का हरियाणा पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। मंगोल जब भी दिल्ली पर आक्रमण करने के लिए बढ़ते तो वे हरियाणा से ही गुजरते थे। मंगोल जब भी आक्रमण करते तो वे यहां लूटमार करके पूरी व्यवस्था को बुरी तरह से नष्ट कर देते। अलाउद्दीन ने मंगोलो को पराजित करके हरियाणा की जनता को मंगोलों से छुटकारा दिलाया। मंगोलों के आक्रमणों के पश्चात् अलाउद्दीन ने लगभग समस्त भारत पर अपना अधिकार कर लिया था। अलाउद्दीन के जीवन के अन्तिम दिनों में प्रशासनिक व्यवस्था बुरी तरह से बिगड गई। अनेक स्थानों पर उसके विरूद्ध विद्रोह होने लगे। अलाउद्दीन स्वंय अपनी आँखों से अपने साम्राज्य का पतन देख रहा था। इसी मानसिक पीडा के कारण 1316 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु के बाद शिहाबुद्दीन उमर, कुतुबुद्दीन मुबारक शाह के संरक्षण में सुल्तान बना। मुबारक शाह ने एक षडयन्त्र रचकर शिहाबुद्दीन उमर को कैद कर लिया। इसके पश्चात् वह स्वयं सुल्तान बन गया। मुबारक शाह के बाद नासिरूद्दीन खुसरो शाह ने शासन किया। इन दोनों ने 1320 ई. तक शासन किया। ये दोनों अयोग्य शासक थे। इनके समय में काफी विद्रोह हुए एवं इनके अधीन अनेक इम्तादार स्वतन्त्र हो गए। 1320 ई. में दिपालपुर के सूबेदार गाजी मलिक ने खुसरो शाह को सुल्तान मानने से इन्कार कर दिया। गाजी मलिक अपनी सेना सहित दिल्ली की ओर बढ़ा। दिल्ली जाते समय उसने समाना (हरियाणा) के सूबेदार मलिक यकलखी से युद्ध करना पड़ा। गाजी मलिक ने उसे पराजित कर दिया। इसके पश्चात् सिरसा के पास खुसरोशाह के भाई हिमासुद्दीन को भी पराजित किया। इसके बाद दिल्ली पहुँकर खुसरोशाह को पराजित करके उसकी हत्या कर दी एवं स्वंय ग्यासुद्दीन तुगलकशाह के नाम से दिल्ली के सिहांसन पर बैठा। इस प्रकार भारतीय इतिहास में खिलजी वंश का पतन एवं तुगलक वंश का उदय हो गया।

तुगलक वंशः

खुसरो शाह को पराजित करके गाजी मलिक 8 सित्मवर, 1320ई. को दिल्ली का सुल्तान बना। इससे पहले वह हरियाणा पर अपना अधिकार कर चुका था। अब उसके साम्राज्य में हरियाणा सहित उतर-भारत का एक बड़ा भू-भाग था। सुल्तान बनने के बाद उसके अपनी आंतरिक स्थिति को सुधारा। उसने अपने राज्य के

अमीरों एवं सरदारों को सन्तुष्ट किया। ग्यासुद्दीन ने अनेक अभियान किए तथा दक्षिणी भारत में भी अपने साम्राज्य का विस्तार किया। उसके दक्षिणी अभियान के दौरान मंगोलों ने शीरमुगल के नेतृत्व में उतरी-पश्चिमी सीमा पर आक्रमण कर दिया। समाना के गर्वनर हाकिम अलाउद्दीन ने सुल्तान को इसकी सूचना भेजी। सुल्तान ग्यासुद्दीन ने बिना देरी किए समाना के गर्वनर को सहायता के लिए सेना भेजी। इसके बाद इस संयुक्त सेना के मंगोलों को पराजित कर दिया तथा अनेक मंगोल सैनिकों को बन्दी बना लिया।

इसके पश्चात् ग्यासुद्दीन तुगलक दक्षिणी अभियान के बाद दिल्ली लौट रहा था। दिल्ली के पास अफगानपुर में सुल्तान के स्वागत के लिए लकड़ी का महल बनाया गया। इसी महल के ठह जाने के कारण मार्च 1325 ई. में सुल्तान ग्यासुद्दीन की मृत्यु हो गई। कुछ इतिहासकार इसके पीछे उसके पुत्र जूना खाँ का षडयन्त्र मानते हैं।

ग्यासुद्दीन तुगलक की मृत्यु के बाद उसका पुत्र जूना खाँ मोहम्मद बिन तुगलक के नाम से सुल्तान बना। यह सुल्तान फारसी एवं अरबी भाषा का विद्वान होने के साथ-साथ खगोल, औषधिशास्त्र दर्शन विज्ञान आदि का ज्ञाता था। वह कवि एवं लेखक भी था। ग्यासुद्दीन बड़ी-बडी योजनाएँ बनाता तथा उसके लिए काफी धन भी लगाता। वह अपनी योजनाओं को असफल होते देखकर तुरन्त अपने निर्णय बदल लेता था। जैसे-उसने अपनी राजधानी दिल्ली से देवगिरी स्थानांतरित की एवं बाद में फिर से दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया। इसमें काफी जन-धन का नुक्सान हुआ। मोहम्मद तुगलक ने काल में अनेक विद्रोह एवं अकाल पड़े। इससे राज्य में शान्ति भंग हुई। हरियाणा में भी जगह-जगह विद्रोह हुए। सुनाम, कैथल, समाना, कुहराम आदि के किसानों ने कर देना बन्द कर दिया। काँगड़ा में भी विद्रोह हुआ, परन्तु इन विद्रोहों को दबा दिया गया।"

मोहम्मद तुगलक के शासनकाल में भी 1327 ई. के लगभग मंगोलों ने उत्तरी-पश्चिमी सीमा से आक्रमण किया। मोहम्मद बिन तुगलक ने मंगोल नेता अलाउद्दीन तार्माशीरीन को पाँच हजार दीनार देकर वापस भेज दिया। मंगोलों के वापस जाने के बाद सुल्तान मोहम्मद ने उतरी-पश्चिमी सीमा की ओर ध्यान दिया। 1357 ई. में सुल्तान मोहम्मद तुगलक सिन्ध में विद्रोह का दमन करने के पश्चात् राजधानी वापस आ रहा था। रास्ते में मोहम्मद तुगलक के बीमार होने के कारण उसकी मृत्यु हो गई।

मोहम्मद तुगलक निःसन्तान था। अतः उसने अपनी मृत्यु से पूर्व ही अपना उतराधिकारी फिरोज तुगलक को घोषित कर दिया था। वह उसका चचेरा भाई था।

कुछ इतिहासकारों का मत हैं कि मोहम्मद तुगलक की मृत्यु के बाद अमीरों. सरदारों, मलिकों आदि ने फिरोजशाह को सुल्तान बनाने का निश्चय किया। आर. सी. जौहरी के अनुसार" "यदि मोहम्मद तुगलक ने फिरोज को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया होता तो सुल्तान मोहम्मद तुगलक की मृत्यु के तुरन्त बाद तथा अपने आप ही फिरोज का राज्यभिषेक हो जाता और अमीरों तथा मलिकों को उसकी चुनने की आवश्यकता नहीं होती।" अतः 23 मार्च, 1351 ई. को फिरोज तुगलक सिंहासन पर बैठा। फिरोज तुगलक ने जनहित के कार्यों की तरफ ज्यादा ध्यान दिया। उसने कृषि, व्यापार, उद्योग आदि में व्यापक सुधार किए। फिरोज के शासनकाल में हरियाणा प्रदेश के लोगों को काफी लाभ पहुँचा। हरियाणा में वर्तमान हिसार, फिरोजशाह ने ही 'हिसार फिरोजा' के नाम से बसाया था। मोहम्मद तुगलक ने हाँसी के स्थान पर हिसार फिरोजा को इक्ता बनाया। इसमें हाँसी, अग्रोहा, फतेहाबाद, सरसुती (सिरसा) आदि तक का क्षेत्र था। हरियाणा में सफीदों (तुगलकपुर) का यल्खा, रेवाड़ी का ताजुद्दीन तथा मेवात का नाहर मेवाती प्रमुख इक्तादार थे।

फिरोजशाह तुगलक उदार एवं दयालू शासक था। इसी दयालुता एवं उदारता के कारण उसका साम्राज्य छिन्न-भिन्न होने लगा, यद्यपि उसने अपने साम्राज्य को संगठित करने का प्रयास अवश्य किया। फिरोज तुगलक की इस समय आयु लगभग 80 वर्ष हो गई थी। इसी कारण प्रशासनिक व्यवस्था दिन-प्रतिदिन बिगडती चली गई। अतः अपने जीवन के अन्तिम दिनों में अपना उतराधिकारी अपने पौत्र तुगलक शाह बिन फतह खान को घोषित कर दिया। 1388 ई. में फिरोज तुगलक की मृत्यु हो गई। फिरोज तुगलक की मृत्यु के साथ ही तुगलक वंश का पतन आरम्भ हो गया।

फिरोज तुगलक की मृत्यु के बाद उसका पौत्र तुगलक शाह गद्दी पर बैठा। वह एक अयोग्य शासक था। 1389 ई. में उसकी मृत्यु के उसका भाई अबूबक्र सिहांसन पर बैठा। इसके बाद 1394ई. में हुमाँयू अलाउद्दीन सिकंदर शाह ने दिल्ली सल्तनत पर शासन किया। 1394 ई. में ही सिकंदर शाह की मृत्यु हो गई। थी। 1398 ई. में समरकन्द का शासक तैमूर भारत पर आक्रमण करने के उद्देश्य से आ पहुंचा।

तैमूर का आक्रमणः-

तैमूर का जन्म 1336ई. में समरकन्द के पास केश नामक नगर में हुआ था। 1370ई. में उसने समरकन्द पर अपना प्रभाव जमा लिया तथा वहाँ के सिंहासन पर बैठा। उसने फारस, ख्वारिज्म, मैसोपोटामिया आदि देशों पर विजय प्राप्त करके अपने साम्राज्य का विस्तार किया। तैमूर निरंतर विजयी होता गया। इन्हीं विजयों से उत्साहित होकर उसने भारत पर आक्रमण करने की योजना बनाई। वह भारत की धन-सम्पदा को लूटना चाहता था। इसी कारण 1398 ई. में उसने भारत पर आक्रमण कर दिया। तैमूर ने भारत पर आक्रमण से पहले अपने पौत्र पीर मोहम्मद को सेना सहित भारत की सही स्थिति का पता लगाने के लिए भेजा। उसने सिन्धु नदी को पार कर उच्छ एवं मुल्तान पर अपना अधिकार कर लिया। इसके बाद सतलुज नदी के पास तैमूर का इन्तजार करने लगा।" इस समय भारत की राजनीतिक दशा काफी बिगड़ी हुई थी। जिसका पूरा लाभ तैमूर को मिला। तैमूर 90 हजार घुड़सवार सेना सहित सिन्धु नदी को पार करके लाहौर पर आक्रमण कर दिया। इसके पश्चात् तैमूर की सेना पीर मोहम्मद से मिल गई वहाँ से तैमूर ने तुलम्बा के शासक जसरथ को पराजित किया। जसरथ खोखरों का सरदार था।" इसके पश्चात् तैमूर ने राजस्थान में प्रवेश किया। वहाँ उसने भटनेर (हनुमानगढ़) पर आक्रमण कर दिया। भटनेर के राजपुतों ने तैमर का विरोध किया, परन्तु तैमूर ने भटनेर के राजपूतों को पराजित कर दिया। भटनेर में लूट-मार करने के बाद तैमूर दिल्ली पर आक्रमण करना चाहता था, इसलिए उसे हरियाणा होकर दिल्ली जाना पड़ा। भटनेर को लूटने के बाद वह घग्घर नदी के साथ होते हुए हरियाणा में प्रवेश कर गया। घग्घर नदी से लगते हुए रानियों गाँव में एक झील के किनारे उसकी सेना ने आराम किया। इसके बाद वह फिरोजाबाद, हरणीखेड़ा होता हुआ सरसुती (सिरसा) पहुँचा। सरसुती (सिरसा) के लोगों ने तैमूर को सेना का डटकर मुकाबला किया। इस संघर्ष में तैमूर का एक सेनापति आदिल फर्राश भी मारा गया। अन्ततः तैमूर ने सिरसा की जनता को पराजित कर दिया। इस संघर्ष में हजारों लोग मारे गए। इस प्रकार तैमूर ने सरसुती पर अपना अधिकार कर लिया। यहाँ लूटमार करने के पश्चात् तैमूर ने दिल्ली की तरफ प्रस्थान किया।" इसके बाद सिरसा से कुछ दूरी पर फतेहाबाद में तैमूर ने आक्रमण कर दिया। तैमूर के आने का समाचार सुनकर फतेहाबाद के अधिकतर के लोग नजदीक के जंगलो में भाग गए। यहाँ तैमूर के सैनिकों ने कत्लेआम किया एवं खुब लूटमार की। फतेहाबाद को लूटने के बाद तैमूर अहरोनी पहुँचा। यहाँ के अहीर अपने आपको यदुवंशी क्षत्रिय मानते थे। यहाँ की सेना और जनता ने तैमूर के साथ संघर्ष किया, परन्तु वे तैमूर से पराजित हो गए। इस संघर्ष में बहुत से अहीर मारे गए तथा कुछ अहीरों को तैमर ने बन्दी बना लिया। तैमूर ने इस कस्बे को आग से जमा दिया। इसके पश्चात् तैमूर ने टोहाना पर आक्रमण कर दिया। यहाँ के जाटों के साथ तैमूर का युद्ध हुआ। टोहाना के जाट तैमूर की सेना का मुकाबला न कर सके तथा वे पराजित हो गए। इस संघर्ष में लगभग दो हजार जाट मारे गए। यहाँ से तैमर घग्घर के किनारे होता हुआ समाना पहुँचा। यहाँ वह अपने दूसरे सेनापतियों महमूद एवं रूस्तम से मिल गया। तैमूर इन्हें काबुल के रास्ते भारत आने के लिए पीछे छोड़ आया था।" समाना को लूटने के बाद तैमूर हत्याकाण्ड करता हुआ कैथल आ पहुँचा। कैथल को लूटने के बाद वह असन्ध एवं साल्वान को लूटते हुए पानीपत पहुँचा।" जब तैमूर पानीपत पहुँचा तो यहाँ के लोग शाही आदेश के अनुसार इस नगर को छोड़कर चले गए। के. सी. यादव के अनुसार "तैमूर ने इस नगर को जी भर कर लूटा और असंख्य धन-दौलत के अतिरिक्त लगभग एक लाख साठ हजार मन गेहूँ प्राप्त किया।" इस नगर से प्रस्थान करने के पश्चात् तैमूर ने छह मील दूर यमुना नदी की किसी शाखा के किनारे पड़ाव डाला। यहाँ कुछ दिन आराम करने के पश्चात् वह लूटमार एवं नरसंहार करता हुआ दिसम्बर, 1398 ई. में दिल्ली पहुँचा।

तैमूर हरियाणा में लगभग एक महीना रहा। यहाँ अनेक स्थानों पर हरियाणा के लोगों ने तैमूर का सामना किया। हरियाणा की जनता को दिल्ली सल्तनत सहायता प्राप्त न होने के कारण वे पराजित हुए। हरियाणा को लूटने के बाद जब तैमूर ने दिल्ली पर आक्रमण किया तो यहाँ का शासन नासिरूदीन अपने वजीर इकबाल खाँ के साथ दिल्ली छोडकर भाग गया। तैमूर पन्द्रह दिन तक दिल्ली में रहा। यहाँ उसने खूब लूटमार की। तैमूर ने यहाँ हजारों लोगों को गुलाम बना दिया। यहाँ के प्रमुख शिल्पियों एवं कारीगरों को बन्दी बनाकर समरकन्द भेज दिया। दिल्ली से धन-सम्पदा लेकर तैमर ने समरकन्द की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में उसने मेरठ एवं हरिद्वार को लूटा। इसके बाद उसने जम्मू एवं कांगड़ा को भी ध्वस्त किया। इस तरह से तैमूर लूट के सामान तथा अपनी विजयी सेना के साथ मार्च, 1399 ई. में सिन्धु नदी को पार करके चला गया।" तैमूर ने वापस जाते समय लाहौर, दीपालपुर एवं मुल्तान का प्रशासन अपने सेनापति खिज्र खाँ को सौंप दिया।

तैमूर के आक्रमण के बाद उत्तरी भारत में अराजकता फैल गई। सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक जीवन अस्त-व्यस्त हो गया। इसके परिणामस्वरूप जगह-जगह अनेक विद्रोह होने लगे। हरियाणा की जनता को भी सल्तनत के प्रति विश्वास नहीं रहा, क्योंकि उन्हें तैमूर के आक्रमण के दौरान कोई सहायता नहीं मिली। यहाँ भी अनेक विद्रोह हुए। तैमूर का आक्रमण ही एकमात्र ऐसा आक्रमण था, जिससे भारत को इतनी अधिक हानि हुई। इससे अधिक भयंकरता अन्य किसी आक्रमण में नहीं थी। इस आक्रमण के बाद लगभग तुलगक वंश का पतन हो गया। तैमूर के वापस जाते ही नासिरूद्दीन महमूद ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया। उसके वजीर इकबाल ने भी दिल्ली के आस-पास के कुछ क्षेत्रों पर अपना अधिकार कर लिया। इकबाल ने धीरे-धीरे अपने साम्राज्य का विस्तार करना आरम्भकर दिया। 1401 ई. में सुल्तान महमूद एवं इकबाल दोनों आपस में मिल गए। इकबाल ने दिल्ली का शासन पूर्णतः अपने हाथों में ले लिया। इसके पश्चात् इकबाल से तंग आकर सुल्तान महमूद कन्नौज में रहने लगा। इकबाल ने अपने साम्राज्य के विस्तार के लिए मुल्तान पर आक्रमण कर दिया। वहाँ का शासक खिज्र खाँ था। इकबाल खिज्र खाँ से युद्ध करता हुआ मारा गया। इसका लाभ सुल्तान महमूद को मिला। दिल्ली के दौलत खाँ एवं अन्य अमीरों के निमन्त्रण से वह पुनः दिल्ली का शासक बन गया। 1412 ई. में सुल्तान महमूद की मृत्यु हो गई। इसके पश्चात् राज्य के अमीर, सरदारों ने दौलत खाँ को दिल्ली का शासक बना दिया। 1414 ई. में खिज्र खाँ ने दिल्ली पर आक्रमण कर दिया। खिज्र खाँ ने दौलत खाँ को पराजित करके दिल्ली पर अपना अधिकार कर लिया। उसने दिल्ली पर अधिकार करके एक नए वंश की नींव डाली। इस वंश का भारतीय इतिहास में 'सैयद वंश' के नाम से जाना जाता है।

संदर्भ ग्रंथ -

1.पाठक, विशुद्धानंद- - उत्तर भारत का राजनीतिक इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान,

2.पाठक, रश्मि- दिल्ली सल्तनत का इतिहास अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस,

3.पाण्डेय, आर०एन०- प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृक्तिक इतिहास

4.भारतीय मध्य युग का इतिहास, इण्डियन, प्रेस प्रा० लि०, प्रयाग (इलाहाबाद), 1968

5.पाण्डेय, राजबलिहैप्राचीन भारत, नंद किशोर एण्ड संन्स, पोस्ट बॉक्स न० 27, वाराणसी,

6.भारतीय इतिहास का सामान्य परिचय, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, 1963 ।

7.पाण्डेय, विमलचन्द्र- प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, भाग-1,

8.पाण्डेय, श्रीनेत्र- भारतवर्ष का बृहत इतिहास, लोक भारती प्रकाशन

9.पांथरी, भगवती प्रसाद- राजवंशः मौखरी और पुष्पभूति, विहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,

10.प्रकाश, बुद्वहैहरियाणा का इतिहासः एक सर्वेक्षण